कक्षा+12 (हिंदी)

आधुनिक काल की मुख्य प्रवृत्तियाँ/ विशेषताएँ:-_____तैयार कर्ता व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

1.गद्य का आगमन :-आधुनिक काल से पूर्व अधिकतर साहित्य पद्य में ही लिखा जाता था किंतु आधुनिक काल में पद्य के साथ-साथ गद्य में भी साहित्य की रचना होने लगी ।गद्य का आगमन इस काल की प्रमुख विशेषता है । इसी कारण गद्य की प्रधानता को देखकर ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को 'गद्य-काल' कहा है। सभी रचनाकारों ने गद्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । आधुनिक काल की लगभग सभी विधाओं का विकास इस काल में हुआ। गद्य की विभिन्न विधाएँ जैसे कहानी,कविता, उपन्यास, एकांकी, नाटक, निबंध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा आदि अपने पूर्ण विकास के साथ दिखाई देती हैं। इसके साथ ही गद्य की कुछ नवीन विधाएँ जैसे यात्रा वृत्तांत ,संस्मरण,रेखाचित्र रिपोतार्ज इत्यादि का भी आगमन हुआ ।

2.जनजीवन का चित्रण:-आदिकाल और रीतिकाल में जनजीवन की उपेक्षा की गई जबकि आधुनिक काल के साहित्य में जनजीवन का व्यापक वर्णन देखने को मिलता है ।भक्तिकाल के बाद इस काल में जनजीवन में जनचेतना दिखाई देती है ।इस युग में राजनीतिक,सामाजिक और धार्मिक जागृति आयी जिसका प्रभाव साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक ही था । साहित्यकारों का ध्यान सर्वसाधारण की ओर गया। किसान, मज़दूर , विधवा आदि सहानुभूति के पात्र बने। आर्थिक विषमता का चित्रण करते हुए राष्ट्रकवि दिनकर कहते हैं-

श्वानों को मिलता दूध वस्त्र,भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की सूखी हड्डी से चिपक ठिठुर,जाड़ों की रात बिताते हैं।

3.नारी के प्रति व्यापक चित्रण :- आधुनिक काल से पहले कालों में नारी के प्रति बड़ा ही संकुचित दृष्टिकोण दिखाई देता है । परन्तु आधुनिक काल में कवियों ने नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए इसकी गुलामी का विरोध किया है।

पंत ने कहा है- **मुक्त करो नारी को मानव ।**

इसके अतिरिक्त इस काल के कवियों ने नारी के गुणों की महिमा का गान भी किया है।

प्रसाद के अनुसार- **नारी तुम केवल श्रद्धा हो।**

4. **खड़ी बोली की प्रधानता :** खड़ी बोली की प्रधानता हिंदी पद्य और गद्य दोनों के लिए स्वीकार की गयी । नए युग के निर्माण के लिए खड़ी बोली को ही उपयुक्त माना गया। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने कविता में ब्रज के स्थान पर खड़ी बोली हिंदी को स्थापित करके उसे गौरव प्रदान किया । बाद में साहित्य के साथ-साथ यही राजभाषा के पद पर आसीन हुई । इसे राष्ट्रीय एकता के लिए भी उपयुक्त माना गया। समस्त हिंदी जगत आज द्विवेदी जी तथा अन्य हिंदी साहित्यकारों का ऋणी है

5.विभिन्न वादों की प्रधानता : आधुनिक काल में विभिन्न वादों की प्रधानता रही है। इस काल में वादों की बाढ़-सी आ गयी । इनसे इस काल के साहित्य का विकास हुआ।इस काल के प्रमुख वाद हैं- छायावाद,रहस्यवाद,प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि।इन वादों की अपने-अपने गुण व कमियाँ हैं। वास्तव में इन वादों के कारण ही साहित्य रचना का क्षेत्र विशाल बन पड़ा है।==========

तैयार कर्ता व प्रस्तुतकर्ता
डॉ.सुनील बहल
एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)
स्टेट रिसोर्स पर्सन
(हिंदी और पंजाबी)

==========